योगेश्वर 108 स्वामी मुलख राज जी महाराज

का संक्षिप्त

जीवन चरित्र

और

श्री योगेश्वर द्वादश मासा

तथा

श्री सद्गुरु स्तोत्र

प्रकाशक :

योग साधन आश्रम

३, माडल टाऊन, होशियारपुर।

व्यास पूजा 1998

चौथी बार : 1000 मूल्य : 8-00 रुपये

प्राक्कथन

श्री १००८ योगेश्वर सद्गुरुदेव स्वामी मुलखराज जी महाराज का संक्षिप्त "जीवन चरित्र" जिज्ञासु पाठकों के स्वाध्याय के लिए मुद्रित किया जा रहा है। पूर्ण योगी के जीवन का वास्तविक वर्णन सम्भव नहीं। कारण कि योगी का असली जीवन उस के अन्तःकरण की साधना में गुप्त रहता है। जिस को वे प्रकट नहीं करते। उन के जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाओं से उन के महान, दिव्य व्यक्तित्व का किञ्चित् मात्र आभास ही मिलता है।

इसी धारणा के साथ सेवक अपने सद्गुरुदेव के संक्षिप्त जीवन को माननीय पाठकों के करकमलों में समर्पित कर रहा है।

श्री सद्गुरु सेवक
चमन लाल कपूर

ॐ नमः श्री राम मुलख, प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

राम लाल वा मुलख जी
दोनों रूप समान।
इक जोत दोनों में बसे
दोनों को प्रणाम॥

विषय-सूचि

		पृष्ठ
	सद्गुरु मम करतार — — —	
1.	जन्म और शैशव	1
2.	वैराग्य	1
3.	विवाह	2
4.	प्रभु दर्शन	2
5.	कुण्डलिनी जागरण	3
6.	श्री प्रभु जी में तन्मयता	4
7.	छत से चोटी बांध कर ध्यानस्थित होना	5
8.	छत से गिरना और श्री प्रभु जी द्वारा रक्षा	6
9.	प्रभु वियोग में ब्रह्मरन्ध्र में प्राण प्रवेश	7
10.	आंखें बन्द सब कार्य व्यवहार और प्रभु कृपा	8
11.	श्री प्रभु जी का वरदान	10
12.	धर्मपत्नी जी को दिव्य सद्गति	12
13.	प्रेत ग्रस्त पर कृपा	13
14.	भ्रष्ट रूह का भयभीत होना	14
15.	अनोखी निर्भयता	15
16.	देवता का तेज हरण	16
17.	तीसरा नेत्र	17
18.	द्रोपदी देवी को शिव रूप में दर्शन देना	17
19.	ब्रह्मपुरी में कन्दभोग और चीते से मिलाप	18
20.	अनोखा व्योपार	19

21.	देह से प्राणों का बिलगाव	21
22.	कांगड़ा में समाधि लीला	22
23.	दश वर्ष बाद समाधि से उत्थान	23
24.	"शादी ?"—"इन से"	23
25.	आश्रमों का कार्यभार सम्भालना	24
26.	चान्द पुर में	2
27.	मद्रास में अधिकारी जनता पर शक्तिपात	26
28.	रानी सरस्वती पर कृपा	27
29.	मद्रास में अंधे और लंगड़े पर कृपा	28
30.	भक्तों का दारुण संकट अपने पर लेना	28
31.	महान सिद्धियों की प्राप्ति	29
32.	होश्यारपुर में योग साधन आश्रम	31
33.	योग अभ्यास आश्रम कनखल की रचना	32
34.	होश्यारपुर आश्रम में समाधियों का दान	33
35.	समाधि अवस्था में शीरर लीला रमाना	34
	श्री योगेश्वर द्वादश मासा	36
	श्री सद्गुरु स्तोत्र	41

"सद्गुरु मम करतार"

मम सरीखे पतित को, लीना जिन उबार ।
उनके गुण मैं क्या लिखूं, सद्गुरु मम करतार ॥
राम लाल के शिष्य जो, प्रसिद्ध जगत में खास ।
योग योगेश्वर मुलख जी, उनका मैं हूं दास ॥
अमृतसर में प्रकट हो, माया से उपराम ।
दश वर्ष की गूढ़ समाधि, जिन को दीनी राम ॥
दश वर्ष उपरान्त तब, ऋषिकेश में लाय ।
"अब तुम मेरे रूप हो", गुरु कह दीन उठाय ॥
बीड़ा योग थमाय कर, प्रभु ने त्यागी देह ।
आश्रम मुलख सम्भाले, छोड़ पिता के गेह ॥
लवपुर और छेहरटा, ऋषिकेश भी जाय ।
लाखों भक्त उबारे, कौन वर्णन कर पाय ॥
यश मुलख का जग रमा, पुष्पन की जिमी वास ।
कीर्ति उनकी श्रवण कर, चरणी लागा दास ॥

निज चरणों में लायकर, दीना जगत भुलाय।
कर्म योग की दीनी शिक्षा, ध्यान भजन में लाय॥

बहार "चमन" में आ गई, मुलख मिले ऋतुराज।
कलि-२ उसकी खिल गई, देखे चकित समाज॥

समर्पित सद्गुरु चरण में, यह है तुच्छ उपहार।
परम अनुग्रह मन धरि, नाथ करो स्वीकार॥

सेवक

चमन लाल कपूर एम०ए०
आचार्य योग साधन आश्रम
होशियारपुर।

1. जन्म और शैशव

पूज्यपाद सद्गुरु देव स्वामी मुलख राज जी महाराज का शुभ जन्म पंजाब प्रांत जिला गुरदासपुर की तहसील बटाला के दलेरपुर नामक ग्राम में विक्रमी संवत १९५५ माघ संक्रान्ति को अरोडवंश में हुआ। आप के पिता जी का शुभ नाम लाला देवी दास जो और माता जी का शुभ नाम श्रीमती रत्न देवी जी था। आपके पिता आपके जन्म के पश्चात् अमृतसर में आकर व्यापार करने लगे।

आप की मुनीमी की शिक्षा पाँच वर्ष की आयु में आरम्भ हुई। इसके अतिरिक्त आपने किसी दूसरे स्कूल में प्रवेश नहीं पाया।

2. वैराग्य

आठ वर्ष की आयु होने पर आपकी चाची जी का देहान्त हुआ। इस का आपके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उस अल्पायु में ही वैराग्य की जागृति हुई। ईश्वर भक्ति की लग्न लग गई। वह शिक्षा में रुचि न लेकर साधु महात्माओं की संगत में रहने लगे। उन्होंने छोटी आयु में

ही बहुत से सन्तों का संग किया। परन्तु उनकी जिज्ञासा की तृप्ति और ईश्वर प्राप्ति की इच्छा की पूर्ति किसी स्थान पर न हो सकी।

3. विवाह

बीस वर्ष की आयु में आपका विवाह लाला झंडाराम जी की सुपुत्री श्रीमती मोहन कौर से हुआ। परन्तु गृहस्थ में प्रवेश करने पर भी आपके वैराग्य में कमी न आई। आप पूर्ववत साधु सेवी बने रहे। आप की एक ही इच्छा थी कि पूर्णसद्गुरु मिलें जो भगवान् के दर्शन करवा सकें। जो भी सन्त उनको मिलता श्री मुलखराज जी उस से निराश हो कर ही लौटते।

4. प्रभु दर्शन

इन्होंने संवत १९७७ वि० में चौक मल्ला सिंह अमृतसर में प्रथम बार योगेश्वर प्रभु राम लाल जी महाराज के दर्शन किये। उनके दर्शनों का आप के मन पर विलक्षण प्रभाव हुआ। आप पं० राम रत्न के साथ श्री प्रभु जी के स्थान कटड़ा भाई सन्त सिंह में पहुंचे। श्री प्रभु जी ज्योतिष विद्या भी जानते थे। अत: श्री मुलखराज जी ने यही प्रश्न किया कि मेरी जन्म पत्री देखकर बतलाने की कृपा करें कि मुझे सद्गुरु की प्राप्ति कब होगी, जिन की कृपा से मैं ईश्वर के दर्शन कर सकूं। श्री प्रभु जी ने उन्हें

ध्यान में बैठने की विधि बतलाई और अपनी कृपा से तत्क्षण ईश्वर के दर्शनों में चित को अभेद रूप कर दिया। तब से श्री स्वामी मुलखराज जी महाराज तुरिया अवस्था में रहने लगे। देहाध्यास भूल कर कई-२ दिन समाधि में ही व्यतीत होते थे। चलते फिरते भी नेत्र बन्द ही रहते।

5. कुण्डलिनी जागरण

श्री स्वामी जी महाराज की योग की उच्चतम भूमियों की प्राप्ति श्री प्रभु जी की कृपा से हुई और सर्पिणी शक्ति फुंफकार मारकर ऊपर उठी तो श्री स्वामी जी चौंक गए। ध्यान से उठ कर श्री अनाथ नाथ प्रभु जी के चरणों में निजानुभूति का वर्णन किया। कुण्डलिनी जागृति के साथ षट्चक्रों का बेधन हुआ। षट्चक्रों के देवताओं का साक्षात्कर हुआ। और वह एक-२ चक्र में घंटों भर समाधिस्थ रहने लगे।

मूलाधार चक्र में ऋद्धि सिद्धि सहित गणपति जी, स्वाधिष्ठान में सरस्वती सहित ब्रह्मा जी, मणिपूर में लक्ष्मी सहित बिष्णु जी और अनाहत चक्र में पार्वती सहित भगवान शंकर के दर्शनों का प्रवाह सतत बना रहता। उनके ध्यानानुभावों का सम्पूर्ण या विस्तृत वर्णन करना नितांत असंभव है। उनकी स्वात्मस्वरूप में चौबीसों घण्टे स्थिति थी। स्वयं को हर क्षण अपने श्री सद्गुरु देव कृपा

सागर श्री प्रभु जी की गोदी में ही बच्चे के समान बैठे अथवा लेटे देखते। और श्री प्रभु जी के दिव्य स्वरूप में निज स्वत्व को खो देते।

6. श्री प्रभु जी में तन्मयता

एक दिन गोल बाग अमृतसर में एक साथी के साथ बैठें थे तो कहीं से गीत की ध्वनि कानों में पड़ीं। उसी क्षण इनकी वृत्ति श्री प्रभु जी के स्वरूप में लीन हो गई। शरीर की सुधी जाती रही और देह गिर पड़ा। उनके साथी ने बड़ी कठिनाई से घर पहुंचाया परन्तु डयोढ़ी में खड़ा करके चला गया। स्वामी जी गिरे और सर पर गहरी चोट आई। माता जी ने इन्हें चारपाई पर लिटा दिया। मरहम पट्टी की और कई तरह से उठाने का प्रयास किया। पर सफलता न मिली। उनकी आंखें कई घण्टों के पश्चात तब खुलीं जब अन्त:करण में श्री प्रभु जी ने कहा, "बेटा, उठो, तुम्हारे घर वाले बेचैन हो रहे हैं"। घर वालों की सांस में साँस आई।

श्री स्वामी जी ने एक दिन स्माधि में देखा कि आनन्द कंद श्री प्रभु जी अमृतसर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नं० २ पर विराजमान हैं। उनका एक चरण गाड़ी पर है और दूसरा प्लेटफार्म पर और हृदयेश्वर श्री प्रभु जी कहीं जाने को तैयार हैं। श्री स्वामी जी के हृदय में बहुत अधिक

व्याकुलता हुई कि श्री प्रभु जी हमें छोड़कर जा रहे हैं। झट समाधि से उठे और भागे-२ स्टेशन पर पहुंचे। श्री प्रभु जी को प्लेटफार्म नं० २ पर ठीक उसी मुद्रा में पाया जैसे समाधि में दर्शन किए थे। चरणों पर दण्डवत किया। श्री प्रभु जी गाड़ी में सवार हुए और साथ में श्री स्वामी जी महाराज भी। उन्होने श्री प्रभु जी की गोद में सिर रखा और समाधिस्थ हो गये।

7. छत से चोटी बांध कर ध्यान स्थित होना

श्री स्वामी जी का रात्रि के समय सोने से पूर्व दो घण्टे समाधि में बैठने का नियम था। कभी-कभी दिन की थकान के कारण निद्रा आ जाती तो मन को धिक्कारते कि पूर्ण सद्गुरु के मिलाप पर भी सोने में जीवन को खोना क्या अच्छा है। अस्तु श्री स्वामी जी ने छत से रस्सी लटका ली और समाधि में बैठने के समय वह रस्सी अपनी चोटी के साथ कसकर बांध लेते ताकि यदि नींदवश झपकी आए तो चोटी को खिचाव लगने से सचेत हो जाएँ। एक दिन ऐसा ही हुआ। दिन के थके हुए थे। नींद ने अपना प्रभाव दिखाया और जोर से झटका लगा। चोटी उखड़ते-२ बची। परन्तु सम्भल कर फिर समाधि में बैठ गए और चित्त ध्येय में लीन हो गया।

श्री स्वामी जी महाराज का यह नियम था कि प्रात: काल उठ कर सीधे करुणा सागर प्रभु जी के चरणों में जा उपस्थित होना तथा दर्शन, आशीर्वाद प्राप्त करनी। परन्तु उपर्युक्त घटना के बाद जब प्रात: श्री प्रभु जी का मन दु:खी देखा। श्री करुणानिधि प्रभु जी ने अपने सर पर हाथ फेरा और अपनी चोटी के कुछ बाल श्री स्वामी जी के सम्मुख रख दिये और कहा– "बेटा, शरीर को इतना कष्ट न दिया करो। तुम्हारे कष्ट को न सह सकने के कारण ही हमारी चोटी के बाल उखड़ गये।" इस से श्री स्वामी जी को बहुत संकोच का अनुभव हुआ। और दीन दुनियां के वाली श्री सद्गुरु के ध्यान में तल्लीन हो गये।

8. छत से गिरना और श्री प्रभु जी द्वारा रक्षा

एक बार करुणा सागर श्री प्रभु जी ग्रीष्म ऋतु में श्रीनगर (कश्मीर) गये। वहां पर भक्तों के मध्य विराजमान थे तो झट से श्री प्रभु जी की भुजा सूज गई और नीली हो गई। भक्तों ने यह लीला देखकर प्रार्थना की कि महाराज यह आपकी भुजा को अकस्मात क्या हो गया हैं। भक्तवत्सल श्री प्रभु जी ने फरमाया कि हमारा बालक

मुलखराज इस समय अमृतसर में अपने घर की छत से अकस्मात नीचे गिर गया है और उसका बाजू टूटते-२ प्रभु ने बचा लिया है।

यह सब देख और सुनकर भक्तों ने श्री प्रभु जी की भक्त वत्सलता तथा श्री मुलखराज जी की प्रभु चरणों में आदर्श तन्मयता को धन्य धन्य कहा।

9. प्रभु वियोग में ब्रह्मरन्ध्र में प्राण प्रवेश

एक बार श्री प्रभु जी ऋषिकेश से अमृतसर गाड़ी द्वारा आ रहे थे। मार्ग में सहारनपुर कुछ भक्त दर्शनों के लिये आए और उन्होंने विनय की कि महाराज आप अमृतसर जा रहे हैं वहां तो इस समय बहुत गर्मी होगी। वापस चलें। और ग्रीष्म काल मंसूरी में बिताये। श्री प्रभु जी की ऐसी बिल्कुल इच्छा न थी। उन्हें अमृतसर में कार्य था। परन्तु बातों-२ में उनके मुख से "अच्छा" शब्द निकल गया। श्री स्वामी जी महाराज अमृतसर में अपने घर के कमरे में समाधिस्थ थे। श्री प्रभु जी के मुखारविंद से "अच्छा" शब्द सुनकर बेचैन हो गये: वे तो इस प्रतीक्षा में थे कि किस समय अनाथनाथ, दीन दुनिया के वाली अमृतसर स्थूल रूप में पधारें और हम उनके चरणों के साथ लिपटें। अत: "अच्छा" शब्द सुनकर श्री स्वामी जी के

प्राण उछाले और ब्रह्मरन्ध्र का भेदन कर शरीर से निकलना ही चाहते थे कि उधर से श्री प्रभु जी का हाथ सिर पर आया जिसने प्राणों को नीचे उतार दिया।

निश्चित समय पर श्री प्रभु जी की गाड़ी अमृतसर पहुंची। श्री स्वामी जी ने चरणों में गिर कर दण्डवत की। श्री प्रभु जी ने प्यार भरी ताड़ना के शब्दों में कहा "बेटा, क्या अपने प्राणों के साथ ऐसे खिलवाड़ की जाती है।"

10. बन्द आंखों से कार्य व्यवहार और प्रभु कृपा

श्री स्वामी जी महाराज की आंखें चलते फिरते भी मस्ती में बन्द ही रहती थीं और कार्य व्यवहार करते हुए भी नेत्र नहीं खुलते थे। बाजार में गाड़ियें, मोटरें, टांगे आदि पास से गुजर जाते। सड़क पार करते, भीड़ में से होकर जाते परन्तु आंखें बन्द ही रहतीं। अन्य भक्त इस पर बहुत आश्चर्य चकित होते और श्री प्रभु जी से प्रश्न करते कि मार्ग में बन्द आँखें चलते इनके साथ कोई दुर्घटना क्यों नहीं होती। श्री प्रभु जी समझाते कि "यदि ये अपने लिए स्वयं नहीं देखते तो इनके लिए प्रभु जी देखते है।"

श्री स्वामी जी बन्द आंखें ही अपने पिता जी की दुकान पर बैठकर दिन भर काम करते थे। लेन देन सभी बन्द

आंखों से ही होता। श्री प्रभु जी ने लाला देवीदास को यह आश्वासन दिया हुआ था कि यदि श्री मुलखराज के कारण व्यापार में उस की कुछ हानि होगी तो क्षति पूर्ति कर दी जाएगी।

एक दिन ऐसा हुआ कि कोई कुम्हार अपने गधे को लेकर आया। बिनौलों की बोरियाँ श्री स्वामी जी से लीं और बिना पैसे दिए ही लाद कर ले गया। उसी समय आप जी के भ्राता और पिता जी दुकान पर आए और कुम्हार द्वारा खरीदे गए बिनौलों के पैसों का पूछा। श्री स्वामी मुलखराज जी को तब सूझा कि कुम्हार ने तो पैसे दिए ही नहीं। पिता और भ्राता बहुत क्रोध में अन्ए।। और इधर-उधर की बातें श्री प्रभु जी के विषय में कहने लगे।

शीघ्रही वह कुम्हार भी लौट कर आ गया और हाथ बांध कर उसने विनती की "लाला जी, माफ करना मैं पैसे देने भूल गया था।" लाला देवी दास ने कुछ शिष्टता पूर्वक उत्तर दिया "कोई बात नहीं पैसे कहीं चले जाते थे इतनी जल्दी लौटने का क्या कारण है ?"

कुम्हार बोला---'नहीं लाला जी, यह तो घर वाली बात है ! परन्तु वह देखो सामने मेरा गधा बन्धा खड़ा है। और एक लम्बे कद का आदमी पास लठ लिए खड़ा है। वह कहता है कि पैसे देकर आओगे तो छोड़ूंगा।"

यह देखकर लाला देवीदास ने कानों को हाथ लगाये और श्री प्रभु जी को धन्य धन्य कहते हुए कुम्हार से पैसे ले लिए।

11. श्री प्रभु जी का वरदान

एक दिन श्री स्वामी जी महाराज लाहौर शाहालमी गेट के बाहर बाग में श्री प्रभु जी के ध्यान में विराजमान थे। अकस्मात उनके अन्त:करण पर एक प्रकाश पड़ा जिस से उनका ध्यान खुल गया। सम्मुख एक महात्मा खड़े थे। श्री स्वामी जी ने उनका सत्कार किया और आने का कारण पूछा ! महात्मा जी ने उत्तर दिया, "श्रीमान् ! हमने कुछ विशेष बात कहने के लिए आपको ध्यानावस्था से उठाया है। क्षमा करना। पूर्वजन्म में भी हमारा साक्षात्कार हुआ था। और यह कहकर कि फिर मिलेंगे विदा हुए थे। परन्तु उस जन्म में पुन: मिलाप न हो सका। उस वचन को अब पूरा किया है।

प्रथम बात यह कहनी है कि किसी को वचन नहीं देना चाहिए। क्योंकि वचन बद्ध होकर ही हमें इस काल बस्ती में आना पड़ा है।

दूसरी बात यह कि आपको जिन महाप्रभु जी की शरण प्राप्त है वे पूर्ण भगवान है। बस्ती में रहते हुए भी उनकी निर्विकल्प अवस्था बनी रहती है। जो हमारे लिए संभव नहीं।

तीसरी और अन्तिम बात यह है कि आप को श्री प्रभु जी किसी समय वरदान माँगने के लिए कहेंगे। परन्तु आप उन परब्रह्म भगवान से किसी सांसारिक वस्तु की मांग न करनी।

इतना कहकर वह महात्मा विदा हो गये।

जैसा उस महात्मा ने कहा था वैसा ही हुआ। एक दिन श्री प्रभु जी ने प्रसन्नमुद्रा में श्री स्वामी जो को वर माँगने के लिए कहा। स्वामी जी ने कर बाँध कर प्रार्थना की कि मुझे केवल आपके चरणों की धूली चाहिए। श्री प्रभु जी ने फरमाया—'वह तो तुम्हें पहले ही प्राप्त है। और कुछ मांगो!" श्री स्वामी जी ने विनय पूर्वक उत्तर दिया—"हे नाथ! बस उसीं कीं प्राप्ति बनीं रहे।"

श्री प्रभु जी ने अपने शब्दों पर बल देते हुए पुनः उच्चारा "चिरञ्जीव! योग मर्यादानुसार तीन बार ही कहा जाता है। इस लिए हम एक बार फिर कहते हैं कि जो कुछ भी लोक परलोक का माँगना हो मांग लो। परन्तु श्री स्वामी जी ने चरणों पर मस्तक रखकर पुनः विनीत प्रार्थना की—"हे दीन दुनियां के वाली! बस आप के चरण ही मांगता हूँ।"।

श्री प्रभु जी के मुखारविंद से निकला—"तथास्तु"

12. धर्मपत्नी जी की दिव्य सद्गति

श्री स्वामी जी महाराज का नित्य का निमय था कि प्रात:काल उठते ही श्री प्रभु जी के पास चले जाना और उनके स्नान के लिए जल लाना। फिर जो सेवा हो करनी। तत्पश्चात श्री प्रभु जी के चरणी में बैठ कई घंटे ध्यानस्थित रहना। जब श्री प्रभु जी देखते कि जाने का समय हो गया है तो ध्यान से उठाकर घर भेज देते।

श्री स्वामी जी दोपहर का समय दुकान पर व्यतीत करते और सायंकाल चार बजे के लगभग फिर प्रभु जी के चरणों में सेवा. ध्यान के लिए चले जाते। और वहांपर रात के दस ग्यारह बजे तक रहते। जब श्री प्रभु जी देखते कि इन्हें अब घर जाना चाहिए तो उत्थान अवस्था में लाकर घर भेज देते।

घर में स्वामी जी की धर्मपत्नी दरवाजे के साथ कान लगा कर बैठी रहती कि जब मेरे स्वामी आयेंगे तो आहिस्ता से द्वार खोल दूंगी ताकि कहीं घर के अन्य लोगों की निद्रा में विघ्न पड़ने से वे नाराज न हों।

श्री स्वामी जी अपनी धर्मपत्नी की इस सेवा पर बहुत प्रसन्न थे। परन्तु उसे अपने पतिदेव की सेवा का ऐसी पवित्र अवसर दीर्घकाल तक प्राप्त न हो सका। छोटी आयु में ही उस का देहान्त हो गया। लेकिन पति सेवा के फल

स्वरूप श्री प्रभु जी ने उसको वह उच्च गति प्रदान की जो महान तप से मिलती है ।

जिस समय श्री स्वामी जी महाराज अपनी धर्मपत्नी की पिण्ड दान क्रिया कर रहे थे तो उस समय अपनी पत्नी की शुद्ध सेवा का स्मरण कर उनके नेत्रों में आंसू उमड़ आये । तब उसी समय आकाश से एक दिव्य सिहासन उतरा जिस में उनकी धर्मपत्नी दिव्य चतुर्भुज रूप में विराजमान थी । उसने सम्मुख आकर प्रणाम किया और हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "स्वामिन् ! आप की कृपा से मुझे उच्च लोक की प्राप्ति हुई है । परन्तु इस समय आपके नेत्रों का आँसू मुझे उस लोक से यहां ले आया है । आप दुःखी न हों ।" इस प्रकार कह और नमस्कार कर वह श्री स्वामी जी की जय-जय कार करती हुई अपने दिव्य सिंहासन पर पुनः दिव्य लोक को चली गई ।

13. प्रेत ग्रस्त पर कृपा

एक दिन कोई स्त्री श्री प्रभु रामलाल जी के पास आकर विनती करने लगी कि "महाराज मेरे पति को दौरा पड़ता है और उस अवस्था में वह घर के बर्तन, वस्त्र आदि बाहर फेंक देता है। और खूब बोलता है । उसको कोई भी काबू में नहीं कर सकता । कहते हैं उस को कोई भूत, पिशाच

आदि लगा है। यदि किसी मन्त्र, यन्त्र जानने वाले को लाते हैं तो वह उसको भी पीट देता है। आप कृपा करें।"

श्री प्रभु जी ने उस को दुःखी अवस्था में देख करुणा कर कहा - "अच्छा, देवी ! तुम हमारे बालक मुलखराज की पहनी हुई कमीज यदि अपने पति को पहना दो तो उसका भूत पिशाच आदि सब हट जाएगा। जाओ एक नयी कमीज सिलवा मुलखराज को पहना दो और उसकी पुरानी कमीज ले जाओ। हमारी आज्ञा से वह आपको अपनी कमीज देगा।"

उस देवी ने ऐसा ही किया और श्री स्वामी जी की कमीज लेकर जब अपने पति के सामने गई तो उस के आवेश का ठिकाना न रहा। स्त्री ने वह कमीज अपने पति के ऊपर फैंक दी। कमीज का स्पर्श होते ही आवेश समाप्त हो गया और उसका पति कुछ देर बेसुध रहने के बाद बिलकुल स्वस्थ हो गया।

14. भ्रष्ट रूह का भयभीत होना

अमृतसर में नमक मण्डी के पास एक स्त्री के शरीर में सप्ताह में एक बार किसी फकीर की रूह प्रविष्ट होती थी और बहुत लोग आकर अपनी-२ बातें उससे पूछते थे।

श्री प्रभु जी के भक्त और स्वामी जी के मित्र एक व्यक्ति लाला नारायण दास थे। एक दिन वे भी स्वामी

को नमक मण्डी में उस स्थान पर ले गये। बहुत से लोग आकर बैठे थे। वह स्त्री भी अपने आसन पर आकर बैठ गई। फकीर की रूह के आने का समय हो गया। श्री स्वामी जी महाराज ने देखा कि फकीर की रूह मकान के बाहर आकर रुक गई है। लोग हैरान थे कि हम सब बैठे हैं परन्तु आज क्या नई बात है कि देवी में फकीर महाराज नहीं आये। लोगों को इस प्रकार व्याकुल देखकर श्री प्रभु जी ने श्री स्वामी जी महाराज को ध्यान में आज्ञा दी, "बेटा तुम यहां से उठकर चले जाओ। तुम्हारे रहते यह रूह इस कमरे में प्रवेश नहीं कर सकती। जहां योगी बैठा हो वहां पर उसके तेज के कारण भ्रष्ट रूहें समीप नहीं आ सकती।"

श्री प्रभु जी की आज्ञा मिलते ही श्री स्वामी जी अपने मित्र नारायण दास के साथ वहां से उठकर चले आए और तब फकीर की रूह ने स्त्री के घट में प्रवेश किया। इस फकीर को लोग शाहमदार फकीर कहते हैं और बहुत मानते थे।

15. अनोखी निर्भयता

संवत् १९७८ विक्रमी वैशाख मास में अमृतसर में हिन्दू-मुसलमानों की लड़ाई ने ऐसा विकराल रूप धारण कर लिया कि नगर में सब बाजार कई दिनों तक बन्द रहे। अपने-२ बाजारों और मुहल्लों में मुसलमान लोग एकत्र

होकर आते-जाते हिन्दुओं पर आक्रमण कर उन्हें पीटते, लूटते या जान से मार देते। उन दिनों भी श्री स्वामी जी का श्री प्रभु जी के दर्शनों के लिए नित्य जाने का नियम नहीं टूटा। मार्ग में कई स्थानों पर मुसलमानों के झुंडों के मध्य से गुजरना होता। परन्तु आप तो श्री प्रभु जी की रक्षा में थे। आप आंखें बन्द ही चले जाते और किसी को भी साहस न हुआ कि आप का बाल भी बांका करता।

16. देवता का तेज हरण

एक दिन ध्यान में श्री स्वामी जी को एक देवता ने दर्शन दिए और डराने का यत्न किया। श्री स्वामी जी को उत्थानावस्था हो गई। और उन्होंने श्री प्रभु जी के पास उस देवता की बात कही। श्री प्रभु जी ने गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया, "पुत्र! श्री सद्गुरु किस समय के लिए होते हैं।"

श्री स्वामी जी ने श्री प्रभु जी का आशय समझ लिया। ध्यान में बैठे तो पुनः वही देवता प्रकट हो कर भय देने लगा। श्री स्वामी जी ने संकट हारी श्री प्रभु जी का स्मरण किया। वह देवता तत्क्षण परम निस्तेज हो गया और दुबक कर बैठ गया। श्री स्वामी जी महाराज को यह देखकर उस देवता पर दया आई और श्री प्रभु जी से प्रार्थना कर उस देवता का तेज लौटा दिया।

17. तीसरा नेत्र

श्री प्रभु जी ने श्री स्वामी जी को एक दिन फरमाया "पुत्र ! तुम्हारे मस्तिष्क में दोनों भवों के मध्य में ऊपर की ओर कुछ विशेष तपश मालूम हो तो हमें बतला देना" और इसी के साथ अपनी कृपा से उन्हें तीसरा नेत्र प्रदान किया। इस तीसरे नेत्र में २४ घण्टे अटल रूप से आप की स्थिति रहने लगी।

18. द्रौपदी देवी को शिव रूप में दर्शन देने

एक दिन श्री स्वामी जी महाराज मार्ग पर जा रहे थे तो संस्कार वश श्रीमती माता द्रौपदी देवी जी ने आप के इस तीसरे नेत्र के दर्शन किये और चकित हुई कि इस कलिकाल में भगवान शंकर किस तरह प्रकट हुए हैं। पूछने पर आप को पता चला कि यह श्री स्वामी मुलखराज जी हैं और योगेश्वर श्री प्रभु रामलाल जी महाराज के विशेष कृपा पात्र शिष्य हैं।

श्रीमती माता द्रौपदी देवी जी भी पूर्ण सद्गुरु की खोज में थीं। इस अलौकिक दृश्य से अत्यन्त प्रभावित हुई और श्री प्रभु जी के चरणों में पहुंच कर उन्होंने अपना जीवन योग, भक्ति, सेवा रूप में समर्पित कर दिया।

19. ब्रह्मपुरी में कन्द भोग और चीते से मिलाप

श्री प्रभु जी के साथ एक बार श्री स्वामी जी ब्रह्मपुरी के वन में पधारे। प्यास लगने पर श्री प्रभु जी ने उन्हें एक-दो पत्ते किसी जड़ी के दिये और ऊपर से गंगा जी का जल पिलाया। जड़ी के गुण से जल मधुर और सुगन्धित लगा। उसके बाद वन के कन्द उखाड़े और अग्नि में भून कर खिलाये। उन कन्दों की मधुरता की श्री स्वामी जी ने प्रशंसा की तो श्री प्रभु जी ने फरमाया—"पुत्र! जो ऋषि मुनि वनों में प्रभु के आश्रित रहते हैं उनके लिए प्रभु ने बहुत कुछ रचा हुआ है। वे प्रकृति माता की गोद में परम सुख लाभ करते हैं। और बनचर जीव भी उनके भाई बन कर उन से प्यार करते हैं।

जिस समय श्री प्रभु जी यह कह रहे थे उसी समय एक बड़ा-सा चीता सन्मुख आकर खड़ा हो गया। श्री स्वामी जी को अपनी मस्ती की अवस्था में वह प्रिय लगा। और उस खूनखार जीव में प्रभु के दर्शन हुये। श्री प्रभु जी ने पूछा, "राजा जी यह क्या है?" श्री स्वामी जी ने उत्तर दिया, "नाथ, आपकी लीला रचना"।

20. अनोखा व्यापार

एक बार श्री मुलख राज जी को उनके पिता जी ने कहा, "बेटा, ये लो रुपये और ओकाड़ा मण्डी से मक्की दुकान के लिए खरीद लाओ। वहां अपने ही आड़ती हैं उनके पास ठहर जाना। वे तुम्हें मक्की मण्डी से खरीद करवा देंगे।"

श्री स्वामी जी ने नोटों का बण्डल जेब में डाला और गाड़ी में सवार हो गये। आँखें बन्द, श्री प्रभु जी के ध्यान में मग्न यात्रा करने लगे। एक जेब कतरा पास बैठ कर जेब साफ करने का यत्न करने लगा। पास बैठे हुए एक पठान ने उसे धमकाया और श्री स्वामी जी महाराज को सचेत रहने को कहा।

लाहौर में गाड़ी बदलनी थी। परन्तु श्री स्वामी जी गाड़ी में ध्यान मग्न बैठे रहे। एक अन्य यात्री ने पूछा--- "लाला जी, आपने किधर जाना है?" श्री स्वामी जी कुछ सचेत होकर बोले "ओकाड़ा"। यात्री ने कहा "तो जाओ वह गाड़ी तैयार खड़ी है।" श्री स्वामी जी उतरे। नई गाड़ी में ज्यों ही सवार हुए गाड़ी चल पड़ी।

जब ओकाड़ा पहुंचे तो अंधेरा हो चला था। परिचत आड़ती के हां पधारे। आड़ती ने पहचान तो लिया परन्तु मस्ती की दशा में देखकर समझा कि शराब पी होगी। नौकर

को आज्ञा दी इन्हें बिस्तर कर दो और लिटा दो। श्री मुलखराज जी से कहा, "लाला जी, कुछ माल हो तो दे दो, सम्भाल लें।" श्री स्वामी जी ने जेब से नोटों का बण्डल जैसे का तैसा उस के हवाले कर दिया और बिस्तर पर जा श्री प्रभु जी की गोद में लीन हो गये।

प्रातःकाल हुई। सेठ ने आकर देखा। श्री स्वामी जी बैठे हुए थे। परन्तु मस्ती जैसे की तैसी थी। नौकर को आज्ञा दी "इन्हें कुएं पर ले जाओ और दही मल कर नहलाओ। कुछ अधिक पी ली लगती है" नौकर को जैसी आज्ञा हुई उसने वैसा ही किया। श्री स्वामी जी नहा कर लौटे। नाश्ता किया। परन्तु आंखें बन्द ही बन्द। सेठ इस लीला को न समझ सका।

श्री स्वामी जी को साथ ले जाकर मण्डी में मक्की पसन्द करवाने में लग गया। मक्की की मुठ्ठी भर श्री स्वामी जी के हाथ पर धरता और पूछता 'पसन्द है।" श्री स्वामी जी बन्द आंखों ही उत्तर देते 'हां ठीक है।' 'कितनी लें।' 'जितनी मर्जी हो ले लो'। इस तरह सारी मण्डी घूमी और बहुत सी मक्की खरीद कर ली। मण्डी में बात फैल गई कि बाहर का व्यापारी आया है जो सारी मण्डी की मक्की खरीदता चला जा रहा है। मक्की का भाव चढ़ गया।

निश्चित मात्रा से कहीं अधिक मक्की खरीद कर श्री स्वामी जी रेल पर सवार हुये और अमृतसर आ गये। स्टेशन पर इनके पिता जी खड़े थे। सबसे पहला प्रश्न था "कितनी मक्की खरीद की है ?" श्री स्वामी जी ने उत्तर दिया "जितनी कही थी उससे कुछ अधिक।"

पिता जी—"बहुत अच्छा किया, भाव चढ़ गया है।" श्री स्वामी जी ने कहा—"श्री सद्गुरु महाराज की लीला है।"

21. देह से प्राणों का विलगाव

जैसे ज्योति की ओर शलभ का आकर्षण नैसर्गिक और अप्रतिहत है ठीक वैसे ही बल्कि उससे भी अधिक श्री स्वामी मुलखराज जी के अन्तःकरण में श्री प्रभु जी के चरणों के प्रति दिव्य आलौकिक प्रीति थी। प्रभु जी के चरणों में वे इस प्रकार उमड़ती हुई उमंग के साथ जाते जैसे सारे दिन का बिछड़ा बछड़ा बाहर से आ रही अपनी मां से मिलता है।

जब श्री स्वामी जी ध्यान मग्न अवस्था में श्री प्रभु जी के स्थान के समीप पहुँचते तो बहुत बार उनका शरीर बाहिर द्वार पर ही गिर जाता और प्राण निज प्राणाधार श्री प्रभु जी के चरणों में पहुँच जाते। ऐसी अवस्था में श्री प्रभु जी के संकेत से दो तीन भक्त द्वार पर जाते और श्री स्वामी जी के शरीर को उठा कर लाते।

22. कांगड़ा में समाधि लीला

संवत १९८५ विक्रमी की बात है। एक बार श्री स्वामी जी आनन्दकन्द श्री प्रभु जी के साथ काँगड़ा की ओर गये। साथ में ब्रह्मचारी गोपालानन्द भी थे।

काँगड़ा नगर में उन्हें अमृतसर के कुछ भक्त मिले। उन भक्तों की प्रार्थना पर श्री प्रभु जी अपने दोनों बालकों को साथ लेकर एक पहाड़ी के शिखर पर चढ़ गए। चढ़ाई काफी सीधी थी और मार्ग भी झाड़ झंखाड़ से अवरुद्ध था।

शिखर पर कुछ विश्राम करने के उपरान्त साथ आए भक्तों में से एक ने माता दुर्गा की स्तुति में एक भजन गाना आरम्भ किया। उसे सुनकर श्री स्वामी जी देह की सुध विसार कर समाधिस्थ हो गये। इसी प्रकार ब्रह्मचारी गोपालानन्द भी। साथ के भक्त घबरा गये कि अब क्या होगा। वापिस कैसे लौटेंगे। उनकी व्याकुलता को देखकर श्री प्रभु जी ने फर्माया—'तुम घबराओ न। ये जिस प्रकार यहां आए हैं वैसे सुखपूर्वक लौट भी जायेंगे।

श्री प्रभु जी ने तब दोनों के मस्तकों पर हाथ रखकर निजाशीर्वाद से उत्थानावस्था में दोनों को लाया। वे उठ खड़े हुए और श्री प्रभु जी की प्रेरणा से गोली की तरह पर्वत शिखर से नीचे दौड़ पड़े। देखते ही देखते नीचे घाटी

में पहुंच गये। और वहां फिर समाधिस्थ हो गये। ये देखकर अमृतसर के भक्त अतीव प्रभावित हुए।

23. दश वर्ष बाद समाधि से उत्थान

श्री स्वामी जी की आँखें दस वर्ष तक तुरियावस्था में बन्द ही रहीं। जब सन् १९३१ ई० में लाहौर में योग साधन आश्रम की स्थापना हुई तो श्री प्रभु जी ने उन्हें वहां का आचार्य नियुक्त कर प्रचार कार्य में भी प्रवृत कर दिया। और सन् १९३६ ई० में ऋषिकेश आश्रम में श्री प्रभु जी ने श्री स्वामी जी को निम्नलिखित आशीर्वाद आदेश दिया —

"राजा जी, अब तक हमने आपको वर्षों से समाधि में रखा हुआ था। अब आप संस्कारी वर्ग में ध्यान समाधि का दान देते चलो। आप द्वारा रोगियों को निरोगता तथा संस्कारी शरणागत जीवों को ध्यान समाधि की प्राप्ति होती रहेगी।"

24. "शादी ?" "इन से"

श्री स्वामी जी महाराज का सर्वस्व पूर्ण भाव से श्री प्रभु जी के चरणों में समर्पित था। श्री प्रभु जी के चरणों से हट कर एक क्षण के लिए भी उन की वृति अन्यत्र नहीं जाती थी। लौकिक और पारलौकिक सुख आनन्द का एक मात्र स्रोत उनके लिए श्री प्रभु जी के चरण ही थे। उन्होंने

संसार के समस्त सम्बन्धों का स्नेह बटोर कर केवल मात्र श्री प्रभु जी के चरणों के साथ सम्बन्ध जोड़ लिया था।

एक दिन श्री स्वामी जी श्री प्रभु जी के चरणों में बैठे थे। अन्य भी कुछ स्त्री पुरुष श्री प्रभु जी के दर्शनों के लिए आये हुए थे। उस समय एक वयोवृद्ध स्त्री ने श्री स्वामी जी से प्रश्न किया कि—"बेटा, क्या तुम्हारी शादी हो गई है ?" श्री स्वामी जी ने उत्तर दिया, जी हां।" उस स्त्री ने फिर पूछा, "किस से ?" श्री स्वामी जी ने उस समय तुरन्त श्री प्रभु जी की ओर संकेत करते हुए निःसंकोच भाव से कहा—"इन से"

श्री प्रभु जी यह सुनकर मन्द-मन्द मुस्करा दिए।

25. आश्रमों का कार्यभार संभाला

३१ जुलाई सन् १९३८ को जब श्री प्रभु जी ने निज शरीर लीला रमा ली तो सभी आश्रमों का कार्यभार प्रधान आचार्य के रूप में श्री स्वामी मुलखराज जी ने सम्भाला। तब से आप अनथक परिश्रम द्वारा योग प्रचार के महान कार्य में संलग्न हो गए।

योग साधन आश्रम ऋषिकेश, योग साधन आश्रम छेहरटा (अमृतसर) तथा योग साधन आश्रम लाहौर उनकी निजी देख रेख में चलते थे। वे कभी एक आश्रम में रहते कभी दूसरे में।

लेखक ने सन् १९४० में योग साधन आश्रम लाहौर में प्रथम बार श्री स्वामी जो महाराज के दर्शन किए। उन के महान व्यक्तित्व का आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा और अविलम्ब ही योग साधन आश्रम छेहरटा में उन से दीक्षा ग्रहण की और उन की कृपा से जीवन योग मार्ग पर अग्रसर हुआ।

26. चान्द पुर में

श्री स्वामी जी महाराज अन्य नगरों में भी भक्तों की प्रार्थना पर उपदेश आदि देने के लिए पधारते। चाँदपुर, जिला बिजनौर (यू०पी०) में श्री प्रभु जी के कुछ प्रेमी भक्त थे। जब श्री प्रभु जी ने सन् १९४८ में शरीर लीला रमा ली तो चांदपुर वासी भक्तों को जहां श्री प्रभु जी के वियोग का असह्य दुःख पहुंचा वहां कुछ भक्तों की भक्ति में शिथिलता भी आने लगी। यह देख कर उन भक्तों पर मायावी गुरु अपना-२ डोरा डालने का प्रयास करने लगे।

इस स्थिति में चांदपुर के रईस भक्त लाला हरस्वरूप तथा लाला रघुनन्दन प्रसाद ने श्री स्वामी जी महाराज को वहां की वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए चांदपुर पधारने की प्रार्थना की। श्री स्वामी जी उनकी इस प्रार्थना पर मास्टर कुन्दन लाल जी को साथ लेकर दो दिनों के लिए चांदपुर पधारे।

श्री स्वामी जी के आने पर भक्तों के अन्दर उल्लास की लहर दौड़ गई। आनन्दकन्द श्री प्रभु जी के चरणों के प्रति प्रेम का सागर पुनः उमड़ आया! जो ध्यान समाधियां कुछ मंद पड़ गई थीं पुनः भक्तों को प्राप्त हो गईं। श्री प्रभु जी के भक्त पूर्ववत उत्साह सहित श्री प्रभु जी की भक्ति में संलग्न हो गये। बहुत से जन उस समय श्री स्वामी जी महाराज से दीक्षित भी हुए।

लाला हरस्वरूप की एक कन्या थी। उसका नाम था सत्यवती। सत्यवती द्वारा अत्यन्त भक्ति और तन्मयता से गाते हुए भजनों पर प्रसन्न होकर श्री स्वामी जी महाराज ने उसे समाधि अवस्था का दान अपनी कृपा से प्रदान किया। सत्यवती देहाध्यास भुला कर एक मास तक निरन्तर श्री प्रभु चरणों के दिव्य ध्यान में लीन रही।

27. मद्रास में अधिकारी जनता पर शक्तिपात

सन् १९४५ ई० में श्री स्वामी जी महाराज को श्री राम नाम क्षेत्र गंटूर (मद्रास) के अधिकारियों ने श्रद्धा-पूर्वक अपने हाँ आमन्त्रित किया। वहां पर बहुत भारी संख्या में जनता श्री स्वामी जी की अगवानी और दर्शनों के लिए एकत्रित हुई।

वहां हजारों के जनसमुदाय में उपदेश देते हुए योग शक्ति पात का विलक्षण चमत्कार श्री स्वामी जी महाराज ने दिखलाया। अनेकानेक व्यक्तियों को अपने-२ इष्ट देव का साक्षात्कार हुआ। और श्री स्वामी जी महाराज के दर्शन एक अलौकिक दिव्य महापुरुष के रूप में हुए। इस योग दिव्य स्थिति की अनूभूति उन लोगों ने अपने जीवन में प्रथम बार ही की थी। श्री स्वामी जी महाराज की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

गंटूर से श्री स्वामी जी राज महेन्द्री, गांटीग्राम (मसौलीपटम), इलौर, मद्रास आदि नगरों में भी गए। इस प्रकार दो मास तक उधर ठहरे। मद्रास नगर में रानी सरस्वती देवी और रानी लक्ष्मी देवी तथा मसौलीपटम के श्री रामचन्द्र राऊ और डा० नागेश्वर राऊ आदि ने श्री स्वामी जी महाराज से योग मार्ग की दिक्षा ग्रहण की।

28. रानी सरस्वती पर कृपा

रानी सरस्वती के कोई पुत्र नहीं था। श्री स्वामी जी महाराज के आर्शीवाद से उनके हां एक भक्त पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम गुरुप्रसाद रखा गया।

रानी सरस्वती को आठों पहर श्री स्वामी जी में निराकार ज्योति के दिव्य दर्शन होते रहते। उसकी तथा उसके पतिदेव की श्रद्धा श्री स्वामी जी महाराज के चरणों

में नित्य वृद्धि को प्राप्त होती गई । उन्होंने तन-मन-धन से आश्रमों की सेवा की और मद्रास में अपने महल को आश्रम का रूप दे दिया ।

29. मद्रास मे अंधे और लंगड़े पर कृपा

मद्रास प्रांत में कई चामत्कारिक घटनायें श्री प्रभु जी महाराज की अलौकिक शक्ति द्वारा देखने में आई। एक अन्धे को श्री स्वामी जी ने प्रसन्न होकर पुष्प प्रसाद दिया तो उसका अन्धापन दूर हो गया ।

इसी प्रकार कृपा कर श्री स्वामी जी महाराज ने एक लंगड़े को पुष्प माला प्रदान की तो उसे चलने तथा भागने में समर्थ बना दिया ।

ऐसी कृपामयी घटनायें जब वहाँ घटित हुई तो उस प्रदेश में श्री स्वामी जी महराज की ख्याति का बहुत विस्तार हो गया ।

30. भक्तों का दारुण संकट अपने तन पर लेना

सन् १९४८-४९ के मध्यकाल में श्री स्वामी जी पर रोग का महान कष्ट आया । उस समय वे अमृतसर रेलवे

स्टेशन के सामने एक होटल के कमरे में रहकर उपचार करवाते रहे।

यह अति दारुण कष्ट उन्होंने उन प्रभु भक्तों का निजतन पर लिया था जो पाकिस्तान बनने पर पेशावर से लाहौर तक शत्रुओं के चंगुल में फंसे थे।

काकनाड़ी संहिता, ज्योतिष ग्रंथ, में लिपिबद्ध फलादेश के अनुसार यह रोग उनके लिए भयंकर था परन्तु श्री प्रभु जी की कृपा से वे शीघ्र निरोगता को प्राप्त हुए। लेखक उस काल गवर्नमैंट कालेज धर्मशाला में प्रोफैसर नियुक्त था। वहां से आकर श्री स्वामी जी महाराज के उसी होटल में दर्शन प्राप्त किए थे।

31. महान सिद्धियों की प्राप्ति

इस रोग के पश्चात् श्री स्वामी जी महाराज की सिद्धि शक्तियों का प्रकाश संसार में पहले से भी अधिक हुआ *काकनाड़ी ग्रंथ के लेखानुसार—"इस कष्ट भुगतान के पश्चात् गुरुओं के गुरु, प्रभुओं के प्रभु श्री रामलाल जी महाराज आपको बहुत सी सिद्धि शक्तियें कृपा कर अपने अविनाशी स्वरूप से प्रदान करेंगे।"

* देखें भविष्य वाणी पृष्ठ 28-29,
प्रकाशक—योग साधन आश्रम, ऋषिकेश

"सन् १९४१ से १९५७ तक का समय श्री स्वामी मुलखराज के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ व हितकर है, अर्थात् दिन प्रतिदिन आपको श्री महाप्रभु जी की अनुकम्पा से अधिक से अधिक योग शक्तियें प्राप्त होती रहेंगी। आपकी यौगिक सिद्धियों का वर्णन निम्नलिखित है। आपको अष्ट सिद्धियां श्री प्रभु जी की कृपा से प्राप्त हैं। एक शरीर को त्याग कर द्वितीय तन में जाने की शक्ति भी आपको प्राप्त है। तथा अपने सद्गुरुदेव जी की कृपा से आपको प्रत्येक प्रकार की शक्तियें प्राप्त होंगी। आप की गुरु भक्ति शिखर पर पहुंच जायेगी तथा श्री प्रभु जी की कृपा करुणा भी असीम हो जायेगी। अपने सर्वेश सर्वाधार सद्गुरुदेव जी महाराज की कृपा से आपको हर प्रकार से पूर्णता प्राप्त हो जायेगी। तब ऐसी अवस्था में कोई ग्रह नक्षत्रादि अपना प्रभाव नहीं डाल सकेगें। तत्पश्चात् आप को निज के लिये भगवान का समस्त ऐश्वर्य स्वभाविक अटल रूप सें प्राप्त होगा। वे प्रति क्षण अपने आप को व्यापक देखते हुए व्यापक रूप अपने शरणागतों पर प्रकटा सकेंगे। आप की कृपा करुणा से जिज्ञासुओं को मोक्षपद प्राप्त होगा। आपकी कीर्ति जब तक आकाश में सूर्य चन्द्रादि नक्षत्र हैं तब तक अटल रहेगी।"

32. होशियारपुर में योग साधन आश्रम

अब से श्री स्वामी जी महाराज के चरणों में कुछ विशेष संस्कारी भक्तों का आकर्षण उन की शक्ति से हुआ। इन विशेष भक्तों द्वारा श्री स्वामी जी ने कई एक स्थानों पर जन साधारण को योग प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आश्रमों को रचना करवाई।

होशियारपुर में योग साधन आश्रम की स्थापना सन् १९५२ ई० में लेखक के निवास स्थान माडल टाऊन कोठी नंबर ३ पर श्री स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद से हुई। इस आश्रम में संस्कारी नरनारियों को योग के अनेकानेक चामत्कारी अनुभव प्राप्त हुए। साध्य असाध्य रोगों की निवृत्ति और ध्यान समाधि की उच्चस्थिति श्री स्वामी जी महाराज की शक्ति से अधिकारी वर्ग को प्राप्त हुई और हो रही है।

इस आश्रम में श्री स्वामी जी महाराज का आगमन प्रति वर्ष सर्दियों में हुआ करता था।

33. योग अभ्यास आश्रम कनखल की रचना

श्री स्वामी जी महाराज ने रानी सरस्वती देवी तथा अन्य भक्तों की प्रार्थना पर कनखल (हरिद्वार) में भी आश्रम की रचना करवाई। उस आश्रम का नाम श्री योग अभ्यास आश्रम रखा।

तब से श्री स्वामी जी ग्रीष्म काल कनखल तथा ऋषिकेश में व्यतीत करते और शीत ऋतु आरम्भ होने पर छेहरटा आश्रम में पधारते। छेहरटा जाने से पूर्व वे कुछ दिन योग साधन आश्रम होशियारपुर में निवास करते, और होशियारपुर के भक्तों को ध्यान समाधि का दान प्रदान करने के अलावा यहां की जनता को योग के साधनों तथा उपदेशों से कृतार्थ करते।

श्री स्वामी जी महाराज के उपदेशों से होशियारपुर नगर के नर-नारी इतने प्रभावित थे कि वे उनकी प्रतीक्षा में रहा करते। कई वर्षों तक वह क्रम चलता रहा और होशियारपुर में श्री स्वामी जी महाराज का वार्षिक उपदेश अमृत प्रवाह प्रवाहित होता रहा।

34. होशियारपुर आश्रम में समाधियों का दान

होश्यारपुर में श्री स्वामी जी महाराज के पधारने पर हमारे परिवार में खुशी की अद्भुत लहर दौड़ जाती थी। सब बच्चे श्री स्वामी जी महाराज की सेवा में लग जाते और उन से अथाह प्यार को प्राप्त करते। श्री स्वामी जी महाराज जब भी कुछ भोग लगाते तो सब परिवार को प्रसाद देते। एक-२ व्यक्ति को अपने पास बिठला कर उपदेश देते और उनकी त्रुटियां बतलाते।

श्री स्वामी जी महाराज के वचनों ने अगाध प्रेरणा होती। "वीर बनो" कह कर उत्साहित करते। देवियों को आशीर्वाद वचनों के साथ फरमाते 'चतुर्भुजा और शतभुजा' बनो।

एक दिन श्री स्वामी जी महाराज ने मुझे फरमाया "अपने आश्रम में आने वाले भक्तों को समाधि दिया करो।" उस समय तो उनके इस वरदान का आशय भली प्रकार समझ में न आया। परन्तु कुछ ही काल के पश्चात् आश्रम के बहुत से भक्तों को समाधि का दान उनकी कृपा से मिलने लगा। मुझे दीक्षा देने का अधिकार प्रदान किया और अपनी कृपा करुणा की वृष्टि कर भक्तों को योग

समाधियों का अनवरत दान वितरित किया। जिस का अक्षुण्ण प्रवाह अभी तक उनकी शक्ति से चल रहा है।

35. समाधि अवस्था में शरीर लीला रमाना

सन् १९६० के अक्टूबर मास में होश्यारपुर की नर-नारी भक्त समाज श्री स्वामी जी महाराज के आने की राह देख रहा था।

अक्टूबर मास बीतने को था। कनखल से पत्र व्यवहार हो रहा था। नवम्बर में आना है। सब अतीव चाव से प्रतीक्षा करने लगे। नवम्बर भी आ गया, बस अब आने ही वाले हैं। परन्तु अकस्मात दुःख भरा पत्र पहुंचा कि "सद्गुरु देव योगेश्वर श्री १००८ स्वामी मुलखराज जी महाराज ३ नवम्बर १९६० बृहस्पतिवार तदनुसार १८ कार्तिक पूर्णिमा को प्रातःकाल ७-३० बजे कनखल आश्रम में समाधिस्थ होकर शरीर लीला रमा अपने सदगुरु के परम धाम को पधार गये हैं।"

सब भक्तों में शोक छा गया। उस काल मेरे मुँह से आश्रम के भक्तों के लिए सांत्वना के ये शब्द श्री प्रभु जी ने कहलवाये कि "श्री स्वामी जी महाराज हर समय हमारे साथ हैं।"

श्री प्रभु जी द्वारा कहलवाई हुई उपर्युक्त बात प्रत्यक्ष हो कर भक्तों के अनुभव में आ रही है।

श्री स्वामी जी महाराज भगवान के अवतार थे। उनकी पूजा उनके जीवन काल में ही घर-घर में होने लग गई थी। आज हजारों घरों और आश्रमों में उनके मन्दिर बने हैं और भक्तजन दोनों काल उनकी तथा योगेश्वर प्रभु राम लाल जी महाराज की आरती उतारते हैं। भक्तजनों को श्री स्वामी जी महाराज की कृपा से चतुर्विध फल की प्राप्ति हो रही है और आशा है यावच्चन्द्रदिवाकरौ होती रहेगी।

— इति —

श्री योगेश्वर द्वादश मासा

॥ अथ द्वादश मासा प्रारम्भ ॥

चैत्र

चैत्र मास चिन्ता हरण भजो सदा योगेश।
राम लाल करुणा सदन जय जय जय सर्वेश।
जय जय जय सर्वेश विप्र कुल कमल दिवाकर।
गंडाराम सुत निर्मल अघहर दया कृपा रत्नाकर।
चिदानन्द सुन्दर वदन विभु स्वामी लोकेश।
चैत्र मास चिन्ता हरण भजो सदा योगेश।

वैशाख

विश्व वंद्य वैशाख में भजो सदा भगवान।
राम लाल कलिमल हरण योगी राज सुजान।
योगी राज सुजान मनेच्छा पूरण करते।
प्रभु का नाम जहाज भक्त भव सागर तरते।
दिवस नाथ योगी प्रभु कर मन कमल समान।
विश्व वंद्य वैशाख में भजो सदा भगवान।

ज्येष्ठ

ज्येष्ठ जगत करता प्रभु राम लाल द्विज नाथ।
भक्तों के रहते सदा गंडा राम सुत साथ।
गंडा राम सुत साथ कष्ट कलिमल हरते।
सकल जगत आधार भक्त के संकट टरते।
लोक और परलोक के सब सुख प्रभु के हाथ।
ज्येष्ठ जगत करता प्रभु राम लाल द्विज नाथ।

आषाढ़

अति पुनीत आषाढ़ में भज मन परमानन्द।
मुलख राज के रूप में करते प्रभु आनन्द।
करते प्रभु आनन्द योग की शिक्षा देते।
तन मन के सब रोग भक्त के निज पर लेते।
प्रभु शरणागत भक्त के हरते हैं दुःख द्वन्द्व।
अति पुनीत आषाढ़ में भज मन परमानन्द।

श्रावण

श्रावण में श्री मुलख जी हरते तीनों ताप।
निर्मल मन से कर सदा हे मन प्रभु का जाप!
हे मन प्रभु का जाप परम सुख देने वाला।
रोग शोक मद मोह सभी हर लेने वाला।

श्रद्धा की वीणा बजे करो स्मरण आलाप।
श्रावण में श्री मुलख जी हरते तीनों ताप।

भाद्र पद

प्रभु भाद्र पद मास में भक्तों को अपनायें।
तर जाते जो प्रेम से प्रभु को शीश झुकायें।
प्रभु को शीश झुकायें न दर दर ठोकर खाते।
राम लाल प्रभु मुलख एक जिन को दरशाते।
देते शिक्षा योग की सभी रोग मिट जायें।
प्रभु भाद्र पद मास में भक्तों को अपनायें।

आश्विन

आश्विन में यह आत्मा करो नाथ में लीन।
प्रभु भक्ति जल रूप हो अल्प जीव हो मीन।
अल्प जीव हो मीन भक्ति से अति सुख पाते।
मिटता आवागमन मोक्ष का मेवा खाते।
शुद्धासन जो योग का प्रभु उस पर आसीन।
आश्विन में यह आत्मा करो नाथ में लीन।

कार्तिक

कार्तिक में कमला पति कलि में राम स्वरूप।
आज विराजत मुलख में पावन परम अनूप।

पावन परम अनूप कृपा कर प्रभु मुस्कावें ।
देते हैं उपदेश भक्त जन अति सुख पावें ।
राम लाल प्रभु अघहरण अखिल विश्व के भूप ।
कार्तिक में कमला पति कलि में राम स्वरूप ।

मार्ग शीर्ष

मार्ग शीर्ष में मुलख जी मारग रहें बताय ।
देते वह उपदेश हैं जिस से नर तर जाय ।
जिस से नर तरिजाय मोह से पीछा छूटे ।
जीव परम सुख पाय जगत का बंधन टूटे ।
श्रद्धा भक्ति प्रेम से 'बेज़र' प्रभु गुण गाय ।
मार्ग शीर्ष में मुलख जी मारग रहें बताय ।

पौष

पौष मास प्रभु को भजो तन मन धन से मीत ।
जिन के भाग महान हैं लेते बाज़ी जीत ।
लेते बाज़ी जीत शीश का दांव लगाते ।
कामादिक का प्रेम शुद्ध नर नहीं अपनाते ।
दुःख उन को देते नहीं द्वन्द्व घाम और शीत ।
पौष मास प्रभु को भजो तन मन धन से मीत ।

माघ

माघ मुलख प्रभु राम हैं एक रूप भगवंत।
हे मन बारं बार भज अगुण अतीत अनन्त।
जगुण अतीत अनन्त परम हित कारी प्यारे।
शरणागत के पाप ताप मिट जाते सारे।
खिलता मन का पुष्प है प्रभु का नाम बसन्त।
माघ मुलख प्रभु राम हैं एक रूप भगवंत।

फालगुण

फालगुण फल उत्तम मिले खेलो प्रभु से फाग।
रंग मलें वे योग का जिनके पूरण भाग।
जिन के पूरण भाग वहीं सुख पूरण पावें।
रिद्धि सिद्धि सब होय नाथ को जो नर ध्यावें।
'वेज़र' का प्रभु मुलख में पूरण है अनुराग।
फालगुण फल उत्तम मिले खेलो प्रभु से फाग।

★ ★

श्री सद्गुरु स्त्रोत आरम्भ

।। मंगलाचरण ।।

श्लोक

अखण्ड मण्डलाकारं, व्यापतं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

दोहा

श्री गुरु चरण प्रणाम मम, जो दायक फल चार ।
बुद्धि हीन इस दास को, लीजें प्रभु उभार ।।

चौपाई

श्री गुरु देव परम हितकारी,
भव तारण कारण पापारी ।।
रवि समान गुरु तिमिर मिटावें,
चन्द्र समान सुधा बरसावें ।।
जल समान शीतल गुरु वाणी,
ताप मुक्त होते सुन प्राणी ।।
दिव्य अलौकिक गुरु स्वरूप,
सिद्धि सदन गुरु भूपन भूप ।।

गुरु चरणन रज पाप विनाशिनि,
गुरु चरणन रज ज्योति प्रकाशिनी ॥
गुरु चरणन रज मुक्ति प्रदायनी,
गुरु चरणन रज भक्ति प्रदायनी ॥
गुरु गुण गाय तरे सनकादि,
गुरु गुण गाय हरे सब व्याधि ॥
गुरु वर कृपा सुमंगल देनी,
गुरु वर कृपा पाप हर लेनी ॥
गुरु प्यारे प्रभु प्राणाधार,
गुरु बर सकल जगत आधार ॥
गुरु वर अधिक ईश से मानो,
गुरु वर सर्वेश्वर पहिचानो ॥
गुरु वर तीनों ताप निवारें,
गुरु वर भव से पार उतारें ॥
ईश्वर जन्म देत और मारे,
गुरु वर जन्म मरण को टारे ॥
भ्रम में डाले ईश्वर माया,
भ्रम से बाहर करे गुरु दाया ॥
कर्म फलों को ईश्वर देता,
फल इच्छा गुरु बर हर लेता ॥

न्याय करें परमेश्वर माई,
गुरु की दयाल मूर्ति आई ॥
ईश्वर स्वयं न कुछ बतलावे,
गुरु निज मुख से सब सिखलावे ॥
ईश्वर नेत्र से नज़र न आता,
आंखों से गुरु देखा जाता ॥
कान सुनें नहीं ईश्वर वाणी,
गुरु वर ध्वनि श्रोत में आनी ॥
ब्रह्म चरण रज मिले न भाई,
गुरु चरणन रज सुगम मिलाई ॥
गुरु बिन ईश्वर कोई न पावे,
ईश्वर बिन गुरु देखा जावे ॥
बिन गुरु ईश्वर का नहीं ज्ञान,
ईश्वर बिन गुरु नर मिल जान ॥
गुरु की महिमा शंकर गाई,
ब्रह्मा गुरु की स्तुति सुनाई ॥
विष्णु गीत गुरु के गावे,
इन्द्र गुरु को शीश झुकावे ॥
गुरु को सेवत मुनि वर नारद,
गुरु को सेवत भगवति शारद ॥

गुरु सेवा बिन नहीं कल्याण,
गुरु सेवा मुक्ति के प्राण ॥
गुरु सेवा रत जो नर नारी,
मोक्ष धाम तिन को सरदारी ॥
गुरु सेवा में जो जन लीन,
सकल सिद्धि तिन के अधीन ॥
गुरु सेवा जो प्राणी करे,
यम के दण्ड से वह नहीं डरे ॥
गुरु आज्ञा जो पाल दिखावे,
आवागमन में वह नहीं आवे ॥
प्रातः गुरु को शीश झुकावे,
पावन जल से स्नान करावे ॥
गुरु चरणोदक कर के पान,
धन्य जीव उत्तम गति पान ॥
प्रेम से गुरु को भोग लगावे,
गुरु प्रसाद श्रद्धा से खावे ॥
धन्य धन्य सत गुरु की दाया,
ध्याता ध्यान व ध्येय बताया ॥
यदि श्री गुरु की कृपा न होवे,
जन्म अनेक अज्ञानी रोवे ॥

ध्याता बने न ध्यान लगावे,
स्वप्न के अन्दर चैन न पावे ॥
ध्येय तलक ले जाने वाले,
ध्यान की दीक्षा देने वाले ॥
ध्याता का पद देने हारे,
निज आश्रित कर लेने वाले ॥

धन्य धन्य गुरु वर महाराज,
पूरण करें जीव के काज ॥
गुरु पूरण पूरण के स्वामी,
दीन बन्धु गुरु अन्तर्यामी ॥

धन्य धन्य गुरु वर का नाम,
बार बार करूँ देव प्रणाम ॥
गुरु वर करें ग्रहीता[1] नर को,
झोली पांय ग्रहण[2] के वर को ॥

ग्राह्य[3] को वही ग्रहीता पावे,
ग्राह्य पाय भव को तर जावे ॥
ग्राह्य विषय है निश्चय जानो.
ग्रहण स्वरूप बुद्धि का मानो ॥

---

1 ग्रहण करने का अधिकारी ।
2 प्राप्त करने की बौद्धिक योग्यता ।
3 ग्रहण करने योग्य ईश्वर का ज्ञान ।

और ग्रहीता मानो नर को,
तीनों ढूंढत गुरु के वर को ॥
ग्रहण बुद्धि सत गुरु जी देते,
बनें ग्रहीता नर वर केते ॥
ग्राह्य पाय भव को तर जावे,
धन्य गुरु जो ग्राह्य मिलावे ॥
इन में श्री गुरु देव हैं कारण,
भवसागर से पार उतारण ॥
कारण के आश्रित है कार्य,
इसी तत्व को जानत आर्य ॥
गुरु चरणों में परम गति है,
गुरु चरणों में परम सुमति है ॥
गुरु चरणों में सुख का वास,
दुःख हरण कारण गुरु पास ॥
दुःख का हरता जो है कारण,
जो कारण त्रिताप निवारण ॥
उस कारण का उत्तम कारण,
देही का भव ताप निवारण ॥
उस को कहते गुरु महाराज,
जो देही के करे सुकाज ॥

वही सुकाज भक्ति का दाता,
मोक्ष इसी से यह नर पाता ।।
मोक्ष पाय भव बन्धन कटते,
ताते उत्तम नर गुरु रटते ।।
रटें गुरु को शीश झुकावें,
तन मन से गुरु सेव कमावें ।।
आना जाना सेव मिटावे,
उसी सेव से नर सुख पावे ।।
सेवा से गुरु योग सिखाते,
उसी योग से नर तर जाते ।।
योग बिना भव बन्ध न टूटे,
इस बिन आवागमन न छूटे ।।
आवागमन में दुःख को पावे,
सुख के लिए सदा ललचावे ।।
जिस ने गुरु की शरण न जाना,
वृथा है उस नर का ललचाना ।।
गुरु सेवा में लालच करे,
निज सिर गुरु चरणों में धरे ।।
जो मुख से गुरु देव उचारें,
उत्तम नर तत् क्षण कर डारें ।।

हानि लाभ नहीं उसमें देखें,
अपना स्वारथ कबहुं न पेखें ॥

दोहा

अपना स्वारथ देखते वे नर बुद्धि हीन ।
दीन बन्धु गुरु चरण रज तज कर रहते दीन ॥
स्वारथ रूपी सर्प से जो रखते हैं प्यार ।
उन का तो होता नहीं जीवन में उद्धार ॥

चौपाई

लाभ गुरु को शीश झुकाना,
हानि गुरु के बेमुख जाना ॥

लाभ सदा गुरु वर की सेवा,
मोक्ष रूप देती है मेवा ॥

हानि रूप सेवा को तजना,
अन्य किसी को मन में भजना ॥

जो नर नाव पै है असवार,
वही नाव करती है पार ॥

पार होय नर नाव के द्वारा,
गुरु सेवा तिमि एक सहारा ॥

नाव त्याग जो नर दिखलावे,
वह जल भीतर गोते खावे ॥

भव सागर में जल है माया,
उस माया ने जीव डुबाया ॥

गुरु भक्ति जानो जलयाना,
बिनु इस के नर पार न जाना ॥

भूख लगे तब भोजन पावें,
साधन से मन भूख मिटावें ॥

जिस ने साधन नहीं अपनाया,
कष्ट उसी ने भूख से पाया ॥

गुरु सेवा लिमि साधन जानो,
भव जल से तरना है मानो ॥

सफल है साधन जिस नर वर का,
भय उसको नहीं भव सागर का ॥

इस कारण उत्तम मति पावो,
तन मन से गुरु सेव कमावो ॥

गुरु सेवा रवि का उजयारा,
तम अविवेक निवारण हारा ॥

गुरु सेवा धन उत्तम जानो,
इस धन के बिनु निर्धन मानो ॥

फल विहीन निर्धन की आशा,
जल में स्थिर नहीं रहे पताशा ॥
कल्प तरु से गुरु वर बढ़ कर,
कामधेनु से भी गुरु ऊपर ॥
चिंता मणि से गुरु महान,
सुन कर साजन निश्चय मान ॥
अब रहस्य इस का बतलाऊं,
कैसे गुरुवर अधिक सुनाऊं ॥
कल्प काष्ठ चिंतामणि पत्थर,
मुँह मांगा ये देते हैं वर ॥
इन से जो चाहो सो पावो,
जो चिंता हो उसे मिटावो ॥
ऋद्धि सिद्धि ये देने हारे,
पंडित जन इतिहास पुकारे ॥
बिन माँगे ये कुछ नहीं देते,
चाह बिन चिन्ता नहीं हर लेते ॥
पड़े मांगना इन के द्वारे,
बिन मांगे नहीं काज सुवारे ॥
अब गुरु देव की महिमा गाऊं,
अधिकता उन की मैं बतलाऊं ॥

जो नर गुरु की सेव कमावे,
अथवा गुरु की शरण में जावे ॥
कर तन मन गुरु अर्पण डारे,
मुख से गुरु वर महिम उचारे ॥
बिनु मांगे वह सब कुछ पावे,
ऋद्धि सिद्धि का सदन कहावे ॥
गुरु सेवा का जो अभ्यासी,
ऋद्धि सिद्धि तिस की हैं दासी ॥
कल्पादिक नहीं मुक्ति देते,
आबागमन नहीं हर लेते ॥
श्री गुरु देव मुक्ति के दाता,
पालक पोषक जिमि पितु माता ॥
मातपिता मांगन से देवें,
बालक के दुःख को हर लेवें ॥

दोहा

फिर भी मोक्ष न देत हैं, मात पिता सुख धाम ।
मोक्ष धाम देते गुरु, तिन को प्रथम प्रणाम ॥
धन्य धन्य गुरु वर परम, आवागमन मिटाय ।
धन्य वे नर संसार में, जो गुरु सेव कमाय ॥

चौपाई

योगी गुरु भव तारण हारे,
योगी गुरु रवि सम उजयारे ॥
योगी गुरु पुण्यों से मिलते,
जिन की कृपा कमल मन खिलते ॥
योगी गुरु वर योग सिखावें,
योग पाय नर भव तर जावें ॥
अर्जुन प्रति श्री कृष्ण उचारे,
योगी बन जा मित्र प्यारे ॥
योगी बनें सकल दुःख छूटें,
माया पाश क्षणों में टूटें ॥
बिना योग के चैन न पावे,
बिना योग नर गोते खावे ॥
योगी बनो कुन्ति के जाये,
कृष्ण योग महिमाँ इमि गाये ॥
योग बिना सब काज अधूरे,
योगी के सब कारज पूरे ॥
बिना योग नहीं सफल बिहार,
योग बिना निष्फल आहार ॥
योग बिना जो पूजा पाठ,
उस को जानो झूठा ठाठ ॥

जाग्रत स्वप्न योग अपनाइये,
योग बिना नहीं कदम उठाइये ॥
योग बिना चिन्ता नहीं छूटे,
योग बिना भव जाल न टूटे ॥
योग बिना सुख रहता दूर,
योग बिना दुःख पाय जरूर ॥
तीर्थ व्रत बिन योग अधूरे,
योग बिना नहीं कारज पूरे ॥
योग बिना सब काज अयोग,
सब की सफलता केवल योग ॥
योग सिद्धि सब व्याधी भंजन,
योगी बनो हे पाण्डु नन्दन ॥
है सुख मूल योग इक प्यारे,
राजा भिक्षुक योगी द्वारे ॥
योगी को कहते भगवान,
योगी नर हैं सदा महान ॥
जिस नर ने योगी गुरु पाया,
उस मुक्ति का मेवा खाया ॥
योग सिद्धि जिस ने नहीं पाई,
आयु उस ने वृथा गंवाई ॥
निष्फल जाना उस के द्वारे,
खुद नहीं तरे और किमि तारे ॥

इस कारण योगी गुरु होवे,
योगी गुरु पा नर नहीं रोवे ॥
योग बिना जो गुरु कहाते,
खुद डूबें संसार डुबाते ॥
योग बिना नहीं गुरु वर भाई,
उस की पूजा कहीं न आई ॥
योग बिना जो चरण पुजावें,
वे गुरु चेला नरक में जावें ॥
योग बिना जो करते ज्ञान,
कपटी लोभी तिन को मान ॥
करें ज्ञान की मिथ्या बातें,
उनकी बिल्ली के सम घातें ॥
बिल्ली जिमि समाधि लगावे,
और कबूतर को झट खावे ॥
क्षण में फंसे कपोत विचारा,
बिल्ली का बन जाय आहारा ॥
वह कपोत इतना नहीं जाने,
पड़ेंगे अपने प्राण गंवाने ॥
तैसे वे नर मूर्ख सारे,
जो कपटी के जायें द्वारें ॥

दोहा

गुरु योगी पाया नहीं, जन्म अकारथ कीन ।
दीन बन्धु गुरु नहीं मिला, रहे दीन के दीन ॥
गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनों खेलें दांव ।
भव सागर में डूबते, बैठ पत्थर की नांव ॥

चौपाई

गुरु को कीजिये मित्रो ! जान,
पानी पीजिये निशिदिन छान ॥
गुरु योगी को ढूंढन जावो,
धन्य भाग योगी गुरु पावो ॥
गुरु योगी का कठिन है पाना,
यदि मिल जांय तो शीश झुकाना ॥
योगी गुरु की आज्ञा मान,
भाग्यवान उत्तम गति पान ॥
योगी गुरु हों सदा उदार,
योगी गुरु सब के सरदार ॥
योगी गुरु हैं ज्ञान भण्डार,
योगी गुरु की शक्ति अपार ॥
योगी गुरु ही सत्य कर मानो,
और असत्य अयोगी जानो ॥

योगी गुरु भूपन के भूप,
धन्य धन्य योगी का रूप ॥
गुरु योगी की शरण में जाय,
उसको व्याधि कहीं सताय ॥

योगी गुरु के दर्शन पावे,
वह नर आवागमन मिटावे ॥
गुरु योगी का कर गुण गान,
गुरु की कृपा मुक्त हो जान ॥
हे गुरु देव परम हितकारी,
मैं तब चरणों पर बलिहारी ॥
हे गुरु देव कष्ट को हरो,
पार मुझे भव जल से करो ॥
कृपा करो गुरु अन्तर्यामी,
कृपा करो दासन पर स्वामी ॥
चरण सरोज में बख्श निवास,
'बेजर' की कर पूरण आस ॥
दया दृष्टि से मोहे निहारो,
मैं हूँ गुरु वर दास तिहारो ।,
हे गुरु वर हे परम कृपालो,
दया दृष्टि अब करो दयालो ॥

दीक्षित करो योग से जन को,
झोली पावो योग के धन को ॥
जिस से हो मेरा कल्याण,
मन से गुरु के वचन प्रमाण ॥
गुरु शब्दों पर श्रुति को वारूँ,
गुरु शब्दों से तन मन ठारूँ ॥
गुरु वर शब्द परम हितकारी,
गुरु वर प्रतिमा पर बलिहारी ॥
जो मुख से गुरु देव उचारें,
शिष्य उसी पर तन मन बारें ॥
गुरु वर परमेश्वर साकार,
नमस्कार गुरु बारं बार ॥
श्री योगीश्वर बुद्धि विशारद,
गुरुबर पूजन नारद शारद ॥
पांच तत्व से गुरुवर न्यारे,
मन बुद्धि के परे उचारे ॥
योग समाधि गुरुवर देते,
आधि व्याधि क्षण में हर लेते ॥
स्थिति का रूप गुरु बतलावें,
धारणादि सब तत्व जनावें ॥

दिव्य चक्षु के गुरु प्रदाता,
ऋषिदल गुरु की महिमा गाता ॥
दिव्य श्रोत देते गुरु स्वामी,
दिव्य घ्राण दें अन्तर्यामी ॥
सुनें दिव्य वाणी गुरु सेवक,
सूंघें दिव्य गंध गुरु सेवक ॥
रस लें दिव्य गुरु के प्यारे,
जिस से हों जन घट उजयारे ॥

दोहा

दिव्य स्वयं गुरुवर परम, दिव्य दिखावें लोक।
दिव्य दया से दास के, हर लेते सब शोक ॥
गुरु की दिव्य दयालुता, दिव्य लोक ले जाय।
करती दिव्य अदिव्य को, निगमागम यश गाय ॥

चौपाई

जो चक्षु से नज़र न आवे,
वह चक्षु से गुरु दिखावे ॥
श्रोतों से जो सुना न जाता,
उस की ध्वनि गुरु देव सुनाता ॥
घ्राण सुगन्धी जो नहीं पाते,
उसे खींच सतगुरु जी लाते ॥

जो रसना से कथा न जाए,
गुरु की कृपा कथन में आए ॥
जिस का स्पर्श त्वचा नहीं पाती,
गुरु की कृपा स्पर्श में लाती ॥
जिस को कर से छुआ न जावे,
उसे कर से गुरु तिलक लगावे ।
पाँव जहां तक पहुँच न पावें,
क्षण में गुरु वहाँ ले जावें ॥
नेति नेति श्रुति जिस को कहती,
इदमित्थं गुरु कृपा कर लेती ॥
एक रहस्य मैं तुम्हें बताऊँ,
गुरु बिन पुण्य व्यर्थ हैं गाऊँ ॥
व्रत दानादिक तब फल देते,
यज्ञादि तब अघ हर लेते ॥
जब गुरु देव को शीश झुकावो,
जब गुरु देव को पूज दिखावो ॥
बिना गुरु सब शून्य सुकर्मा,
गुरु बिन शून्य यज्ञ व्रत धर्मा ॥
इस कारण यह निश्चय जानो,
गुरु के किये तरो मे मानो ॥

जो गुरु भक्ति करें निष्काम,
उन को मिले मोक्ष का धाम ॥
जो सकाम भक्ति नर करते,
सकल कष्ट गुरु तिन के हरते ॥
नर अपुत्र पुत्रों को पावें,
दीपक गृह उन के जल जावें ॥
धन विहीन पा लेते धन को,
रोगी पाते निर्मल तन को ॥
जो कुछ मुख से मांग दिखावें,
गुरु भक्ति से सब कुछ पावें ॥
गुरु भक्ति सिद्धि की दाता,
गुरु भक्ति श्रुति में विख्याता ॥
गुरु भक्ति सिद्धि की माई,
आदि सृष्टि से यह चली आई ॥
यह विष्णु की परम प्यारी,
ब्रह्मा ने मन में यह धारी ॥
इस को शंकर सीस झुकावें,
इस से गणपति पूज्य कहावें ॥
इन्द्र देवराज कहलाया,
गुरू भक्ति की अतुलित माया ॥

गुरु भक्ति करते दिग पाला,
पाते वे नहीं कभी जवाला ॥
लक्षण गुरु के तुम्हें बताऊँ,
गुरु की प्रतिमा तुम्हे बुझाऊँ ॥
योगी गुरु का नाम है प्यारा,
योगी गुरु का धाम है न्यारा ॥
योगी गुरु डूबत को तारे,
योंगी गुरु के सब कुछ द्वारे ॥
योगी गुरु को शीश झुकावो,
सब सुख उस से हे नर पावो ॥
जन्म अमोलक वृथा गंवाया,
गुरु चरणों में मन नहीं लाया ॥
बिनु पर पक्षी उड़न न पावे,
तैसे गुरु बिन आयु जावे ॥
हे मन मोरे तुम क्या कीना,
आत्म रूप न गुरु का चीन्हा ॥
अब कैसे उत्तम गति पाऊँ,
मुख सूखे मन में पछताऊँ ॥
दीन दयाल दया के सागर,
कृपा दृष्टि करनी नर नागर ॥

निर्मल बुद्धि करो अब मेरी,
अहो नाथ मैं शरण हूँ तेरी ॥
गुरु की दया सुखों की दाता,
यही कथन वेदों में आता ॥
गुरु की दया जगत से तारे,
दुष्ट भाव क्षण में संहारे ॥
धन्य धन्य गुरु अन्तर्यामी,
धन्य धन्य गुरु सब के स्वामी ॥
श्री गुरु देव पै बलि वलि जाऊँ,
श्रद्धा से निज माथ झुकाऊँ ॥
यह ग्रन्थों में है समझाया,
और यही देखन में आया ॥
कलियुग की सब कथा सुनाऊँ,
जो कुछ देखा वह बतलाऊँ ॥
सतगुरु राम लाल अवतारी,
योगीश्वर सब के हितकारी ॥
छेहरटे में आश्रम प्यारा,
ऋषिकेश में भी है न्यारा ॥
आश्रम एक समाई गाम,
योग साधन आश्रम सुख धाम ॥

योगाश्रम कनखल में जान,
आप के और अनेक हैं धाम ॥
होश्यारपुर में उनका स्थान,
जनता का जहाँ हो कल्याण ॥
तिन गुरु देव की लीला न्यारी,
बख्शी मुलख को प्रभु सरदारी ॥
नेत्र उन से अन्धों ने पाये,
मूक अनेक सुकवि बनाये ॥
श्रद्धा से जिस शीश झुकाया,
उस ने मुंह माँगा वर पाया ॥
तीन लोक में कीर्ति छायी,
महिमा नहीं कथन में आई ॥
भक्त अनेक डूबते तारे,
हुये मुक्त साधन जिन सारे ॥
कुछ कुछ उन की कथा सुनाऊं,
सत्य २ में मुख से गाऊं ॥
कान लगा कर सुन लो भाई,
दया दृष्टि देखन में आई,
दुःख भक्तों का प्रभु अपनावें,
सुख उन की झोली में पावे ॥

दोहा

स्वामी जी के भक्त हैं, बाबू सोहन लाल।
घर उन के नहीं पुत्र था, चिन्ता करे बिहाल॥
कृपा दृष्टि गुरु देव की, पुत्र लिया तिन पाय।
जिस घर में अन्धेर था, दीना दीप जलाय॥

चौपाई

पण्डित काला राम जी प्यारे,
उन के बाल काल ने मारे॥
वह गुरु देव की शरण में आया,
सुत उस दीर्घ आयु का पाया॥
गुज्जरमल इक भक्त था प्यारा,
हुआ सुखी गुरु देव के द्वारा॥
पुत्रियें उन के होती आईं,
उन पर कृपा कीन गोसाईं॥
पुत्र रत्न उन ने भी पाया,
योगीश्वर गुरु की यह दाया॥
देवी एक सरस्वती रानी,
वृत्ति उस गुरु चरण में लानी॥
उस को भी वर सुत का दीना,
सुफल जन्म उस का भी कीना॥

तीर्थ राम शरण में आया,
पुत्र रत्न उस ने भी पाया ॥
गुरु की दया का पार न आवे,
कहाँ तलक कवि लिखता जावे ॥
दीपक जले मिटे अन्धेरे,
इन नैनन से 'बेज़र' हेरे ॥
योगी गुरु श्री मुलख प्यारे,
दया दृष्टि के करने हारे ॥
कलियुग में सतयुग दरसावें,
ऋद्धि सिद्धि सब झोली पावें ॥
जो कोई गुरु की शरण में आवें,
रोग जायें अरोग्यता पावें ॥
जो ऐसे गुरु देव विसारें,
वे जीवन की बाज़ी हारें ॥
योगाश्रम में प्रभु की दाया,
जिस ने बेड़ा पार लगाया ॥
भाग्य भले योगाश्रम आवें,
योगी गुरु को शीश झुकावें ॥
श्री प्रभु राम लाल पापारी,
त्रिगुणातीत सगुण उपकारी ॥

उन की प्रतिमा मन को मोहे,
चंवर मुलख के कर में सोहे ॥
धन्य प्रभु दुःख हरने हारे,
मृत्यु अकाल के हरने हारे ॥
प्रभु ने डूबते भक्त तराये,
जलते हुए अशक्त बचाये ॥
योगाश्रम सुरसदन से न्यारा,
भक्त जनों के मन को प्यारा ॥
योगाश्रम करिये दीदार,
जहां प्रभु का है अवतार ॥
धन्य धन्य प्रभु दीनानाथ,
लाज दास को आप के हाथ ॥
जो नर नहीं योगाश्रम आते,
वे निज आयु व्यर्थ गंवाते ॥
योग सिद्धि तीर्थन का स्नान,
करते भक्त योगाश्रम आन ॥
जिन को करती दुःखी बीमारी,
वह दुःख हरते प्रभु अवतारी ॥
'बेज़र' दास शरण प्रभु आया,
गृह बन्धन में अति दुःख पाया ॥

और कहां दुःख जाय सुनाऊं,
कौन हरे दुःख किसे बताऊं ॥
गुरु की दया दृष्टि यदि पाऊं,
तो भव सागर से तर जाऊं ॥
मुख से दुःख गाथा नहीं कहनी,
खामोशी से वेदन सहनी ॥
स्वयं जानते जानन हारे,
तो क्यों मुख से दास पुकारे ॥

दोहा

दीनबन्धु दुःख हरण प्रभु, सेवक आया द्वार ।
चिन्ता चिखा जला रही, गुरु का एक आधार ॥
देखें कब तक होत है, दया आप की नाथ ।
'बेजर नैया डोलती, लाज आप के हाथ ॥

चौपाई

नमो नमो गुरु ज्ञान प्रकाशा,
नमो करें तिमिर का नाशा ॥
नमो नमो गुरु पतित उद्धारा,
नमो नमो मम प्राण प्यारा ॥

नमो नमो गुरु अपरम्पारा,
नमो नमो त्रिगुण ते न्यारा ॥
जो कोई शरण तुम्हारी आए,
चार पदारथ सहज ही पाए ॥

दोहा

सतगुरु पूर्ण योगेश्वर, दीजो दृष्टि अपार ॥
ऐसो कृपा प्रभु कीजिए, दूर हो अन्धकार ॥

— इति —

श्री सद्गुरु स्तोत्र समाप्त

योग साधन आश्रम

3-माडल टाऊन, होशियारपुर

से उपलब्ध होने वाला

★ योग साहित्य ★

1. श्री योग महादिव्य रामायण (छः खण्डों में)
2. नित्य कर्म (नैमित्तिक कर्म सहित)
3. What is Yoga Part I
4. Yogic Cure of Colds, Catarrah & Allied Diseases
5. योग के आसन और योग मुद्रायें
6. योग के आसन और प्राणायाम
7. ਯੋਗ ਦੇ ਆਸਨ
8. योगी सद्गुरु महात्म्य
9. योग पुष्पांजली
10. श्री 1008 प्रभु रामलाल जी महाराज का संक्षिप्त "जीवन परिचय"
11. श्री 1008 स्वामी गुलाबराज जी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र, द्वादश मासा और श्री सद्गुरु स्तोत्र सहित
12. योग मार्ग

नोट :—योग साधन आश्रम, होशियारपुर में हर बीमारी का मुफ्त इलाज योग से किया जाता है।

(मिलने का समय—प्रातः 7 से 8 बजे)